International Research Vision (Int. Res. Vn.)
ISSN: 2454-3721
Volume 3 Issue 2: 35-37, 2017
Available online http://www.bioglobia.in

सन् 1857 ई0 के सिपाही विद्रोह का प्रभाव

विकाश कुमार
एम0 ए0 (इतिहास), माननीय प्रतिकुलपति कार्यालय, ल0 ना0 मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा.846004, भारत
***Corresponding author's e-mail: vikashkumardbg1984@gmail.com**

Received: 23.08.2017 **Accepted: 30.08.2017**

सारांश

सन् 1857 ई0 के सिपाही विद्रोह का स्वरूप विद्वानों में पर्याप्त मतभेद का विषय है। कुछ इतिहासकार इसे मात्र सैनिक विद्रोह या गदर मानते थे, तो कुछ इसे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का प्रथम युद्ध मानते थे। 1857 – 59 के दौरान हुए विद्रोह के प्रमुख केन्द्रो मेरढ़, दिल्ली, कानपुर, लखनऊ, झाँसी और 1857 ई0 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम म्यूटिनी ब्रिटिश शासन के विरूद्ध एक अविस्मरणीय घटना थी।

शीर्षक विश्लेषण

जनवरी 1857 से चबीवाले कारतूस की अफवाह बंगाल के सिपाही में फैलनी शुरू हो गई। इस घटना से बैरकपुर की छावनी में असंतोष फैल गया। बहरामपुर के सौनिकों ने भी इस कारतुस का प्रयोग करने से इनकार कर दिया मंगल पाण्डेय 34 वीं बंगाल नेटिव इनफैन्टी में एक सिपाही थे। 29 मार्च 1857 को बैरकपुर परेड मैदान कोलकाता के निकट मंगल पाण्डेय जो दुगवा रहीमपुर (फैजाबाद) के रहने वाले थे [1]। रेजीमेण्ट के अफसर लेफ्टीनेण्ट बाग पर हमला कर के उसे घायल कर दिया जनरल जान हेएरसेये के अनुसार मंगल पाण्डेय किसी प्रकार के धार्मिक पागलपन में थे जनरल नक जमादार ईश्वर प्रसाद ने मंगल पांडेय को गिरफ्तार करने का आदेश दिया पर जमीदार ने मना कर दिया। सिवाय एक सिपाही शेख पलटु को छोड़ कर सारी रेजोमेण्ट ने मंगल पांण्डेय को गिरफ्तार करने से मना कर दिया। मंगल पाण्डेय ने अपनी साथियों को खुलेआम विद्रोह करने के लिये कहा पर किसी के ना मानने पर उन्होने अपनी बंदूक से अपनी प्राण लेने का प्रयास किया परन्तु वे इस प्रयास में केवल घायल हुऐ 6 अप्रैल 1857 को मंगल पाण्डेय का कोर्ट मार्शल कर दिया गया और 6 अप्रैल को ही फाँसी दे दी गयी [2]। जमींदार ईश्वरी प्रसाद को भी मृत्यु दंड दे दिया गया और उसे भी 22 अप्रैल को फाँसी दे दी गयी। सारी रेजीमेण्ट को समाप्त कर दिया गया और सिपाहीयों को निकाल दिया गया सिपाही शेख पलटु को पदोन्नति कर बंगाल सेना में जमीदार बना दिया गया।

युद्ध का प्रारम्भः

विद्रोह प्रारम्भ होने के कई, महीना पहले से तनाव का वातावरण बन गया था और कई विद्रोहजनक घटनाये घटी 24 जनवरी 1857 को कलकता के निकट आगजनी की कभी घटनाये हुई 26 फरवरी 1857 को 19 वीं बंगाल नेटिव इनफैन्ट्री ने ये कारतूसों का प्रयोग करने से मना कर दिया रेजीमेण्ट के अफसरो ने तोपखाने ओर घुड़सवार दस्ते के साथ इसका विरोध पर बाद में सिपाहीयों की मांग मान ली [3]। ईस्ट इंडिया कम्पनी ने रॉबर्ट क्लाइव के नेतृत्व में सन् 1757 में प्लासी युद्ध जीता। युद्ध के बाद हुई संधि में अंग्रेज को बंगाल में कर मुक्त व्यापार का अधिकार मिल गया इन दो युद्धो में हई जीत ने अंग्रेजो की ताकत को बहुत बढ़ा दिया और उनकी सैन्य क्षमता को परम्परागत भारतीय सैन्य क्षमता से श्रेण्ट सिद्ध कर दिया कंपनी ने इसके बाद सारे भारत पर अपना प्रभाव फैलाना आरंभ कर दिया।

1857 का प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम :

1857 का भारतीय विद्रोह, जिसे प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संगम सिपाही विदोह और भारतीय विद्रोह के नाम से भी जाना जाता है ब्रिट्रिश शासन के विरूद्ध एक सशर्त था। यह विद्रोह दो वर्षो तक भारत के विभिन्न क्षेत्रो में चला। इस विद्रोह का आरंभ छावनी क्षेत्रो में छोटी झड़पो तथा आगजनी स

हुआ था। परन्तु जनवरी मास तक इसने एक बड़ा रूप ले लिया विद्रोह का अन्त भारत में ईस्ट इंडिया कंम्पनी के शासन की समाप्ति के साथ हुआ और पूरे भारत पर ब्रिटिश ताज का प्रत्यक्ष शासन आरंभ हो गया जो अगले 10 वर्षों तक चला [4] ।

सिपाहियों की आशंका :

सिपाहो मूलतः कंपनी की बंगाल सेना में काम करने वाले भारतीय मूल के सैनिक थे बम्बई, मद्रास और बंगाल प्रसीडेन्सी की अपनी अलग सेना और सेनाप्रमुख होता था। इस सेना में ब्रितानी सेना से अधिकारी सिपाही थे। सन् 1857 ई0 में इस सेना में सबसे अधिक भारतीय सिपाही थे। मद्रास प्रेसीडेन्सी की सेना में अलग – अलग क्षेत्रों के लोग होने के कारण ये सेनाए विभिन्नता से पूर्ण थी और इनमें किसी एक क्षेत्र के लोगों का प्रभुत्व नहीं था। परन्तु बंगाल प्रेसीडेन्ट की सेना में भत्ती होने वाले सैनिक मुख्यतः अवध और गन्गा के मैदानी इलाको के भुमिहार ब्राहमण और राजपूत थे [5]। कंपनी के प्रारंभ्भिक वर्षा में बंगाल सेना में जातिगत विशेषाधिकार और रीतिरिवाजों को महत्व दिया जाता था। परन्तु सन् 1840 के बाद कलकता में आधुनिकता प्रसन्द सरकार आने के बाद सिपाहीयों में अपनी जाति खोने की आशंका व्याप्त हो गया।

विद्रोह के कारण :

सन् 1857 के विद्रोह के (1) आर्थिक तथा (2) राजनैतिक कारण के साथ–साथ विभिन्न धार्मिक, सैनिक, तथा सामाजिक कारण भी बताये जाते है।

(1) आर्थिक कारण :

1857 के विद्रोह का एक प्रमुख कारण कंपनी द्वारा भारतीय का आर्थिक शोषण भी था। कंपनी की नीतियों ने भारत की पारम्परिक अर्थव्यवस्था को पूरी तरह से समाप्त कर दिया था। इन नीतियों के कारण बहुत से किसान, करिगर, श्रमिक और कलाकार कंगाल हो गये [6]। इसके साथ–साथ जमीदारों और बड़े किसान की स्थिति भी बदतर हो गयी। सन् 1893 में कंपनी ने एक तरफा मुक्त व्यापार की नीति अपना ली इसके अर्न्तगत ब्रितीनी व्यपारियों को आयात करने की पूरी छूट मिल गई। पारम्परिक उद्योगों का विकास न होने के कारण यह स्थिति और भी विषम हो गयी ।

(2) राजनैतिक कारण :

सन् 1857 और 1856 के बीच लार्ड डलहोजी ने डाक्ट्रिन औफ लैप्स के कानून के अन्तर्गत अनेक राज्यों पर अधिकार कर लिया। इस सिद्धात अनुसार काई राज्य क्षेत्र या ब्रितानी प्रभाव का क्षेत्र कंपनी के अधीन हो जायेगा। यदि क्षेत्र का राजा निसन्तान मर जाता है या शासक कंपनी की दृष्टि में अयोग्य साबित होता है [7]। इस सिद्धात पर कार्य करते हुई लार्ड डलहोजी और उसके उत्तराधिकारी लार्ड कैन्निग ने सतारा, नागपुर, झाँसी, अवध को कंपनी के शासन में मिला लिया कंपनी द्वारा तोड़ी गयी सम्धियों और वादों के कारण कंपनी को रजनैतिक विष्वासनियता पर भी प्रश्नचिन्ह लग चुका था।

क्रान्तिकारियों का प्रभाव :

बिहार में कुंवर सिंह का दमन. बिहारी में विद्रोही नेता कुंवर सिंह ने अंग्रेजों का डटकर मुकाबला किया और निकटवर्ती क्षेत्रों आरा पर कब्जा कर कुंवर सिंह अगस्त 1857 में विद्रोहियों की सहायता के लिए अवध जा पहूँचे कालपी और कानपुर में भी उन्होंने विदोहियों की मदद की मार्च 1858 में कुंवर सिंह ने आजमगढ़ पर अधिकार कर लिया [8]। बलिया के पास गंगा पार करते समय उनकी एक बाँह पर गोली लग गई जिसे उन्होंने काटकर गंगा नदी को समर्पित कर कर दिया 2 अप्रैल 1858 को उन्होंने जगदीशपर पर अधिकार में उनका देहांत हो गया।

साहित्यिक सर्वेक्षण

1857 ई0 का सिपाही विद्रोह से संबधित विषयों पर प्रकाषित ग्रंथों की भरमार है। 19 वीं 20 वीं सदी में सिपाही विद्रोह से संबंधित कई पुस्तके प्रकाषित हुई है। संबंधित कई पुस्तके प्रकाषित हुई है। पूर्व अध्ययनों की समीक्षा के तहत विभिन्न आचार्यो द्वारा संपादित पुस्तको एवं आलेखो का अवलोकन किया गया है। जिसमें 1857 की नामक प्रसिद्ध ऐतिहासिक ग्रन्थों की रचना में 1857 का सिपाही विद्रोह

से सबंधित अनेक तथ्यो को रेखाकित किया गया है। जीसमें Bisheshwar Prasad. P.C. Jusmied) Bandage and freedom (2 vels) Rebellion (1857) और आर सी0 मजुमदा ए0 डी0 पुसलकर (1955–1957) ने अपनी पुस्तक हिस्टी एण्ड कल्वर ऑफ द इंडिया, पीपुल एज ऑफ इम्पेरियल कनौज लेखक ने 1857 का सिपाही विद्रोह की सामाजिक, आर्थिक राजनीति एवं प्रशासनिक व्यवस्था की भी चर्चा की है।

संदर्भ सूची

1. Bisheshwar Prasad P.C. Josni (*ed.*) : Bondage and Freedom (2 Vols.) Rebellion 1857.
2. R.C. Majumdar : History of Freedom Movement in India.
3. Tarachand : History of Freedom Movement in India.
4. B. L. Grover : A New Look on Modern Indian History.
5. M. S. Jain : Adhubnik Bharat ka Itihas (in Hindi).
6. H. H. Dodwell : Cambridge History of India Vol. 6.
7. P. S. Pear : Oxford History of India.
8. B. L. Grover and Yashpal : Adhunik Bhartiya Itihas Ek Navin Mulyankan.